जयशंकर प्रसाद का राष्ट्रीय चिन्तन एवं स्त्री दृष्टि

डॉ0 शोभारानी श्रीवास्तव
एसोसिऐट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
बद्री विशाल पी॰जी॰कॉलेज फर्रूखाबाद, सी॰एस॰जे॰एम॰ वि॰वि॰, कानपुर

मीरा
शोध छात्रा (आर0जे0एन0एफ0 जे0आर0एफ0) हिन्दी,
बद्री विशाल पी॰जी॰कॉलेज फर्रूखाबाद, सी॰एस॰जे॰एम॰ वि॰वि॰, कानपुर,

सारांश

छायावाद काल का साहित्य रीतिकालीन साहित्य से इतर एक अलग रूप में उभरा। अंग्रेजों के सम्पर्क में आने से देश में व्याप्त कुछ सामाजिक परम्पराएं एवं रूढ़ियाँ टूटती हुयी दृष्टिगोचर होने लगीं। देश की राजनैतिक सत्ता नरेशों से हटकर अंग्रेजों के हाथ में आ चुकी थी। छायावाद का समय गाँधी जी के नेतृत्व एवं राष्ट्र भावना के प्रसार का समय था जिसकी छाप जयशंकर प्रसाद के साहित्य पर स्पष्टतः देखी जा सकती है।

प्रसाद जी के सम्पूर्ण साहित्य में राष्ट्रभक्ति एवं स्त्री के प्रति उदात्त भाव झलकता है। उनके समय में स्त्रियों की दशा अत्यन्त दयनीय थी। इसी कारण आदर्श नारीत्व के प्रति संवेदना प्रायः उनके सभी नाटक, एकांकी एवं कहानियों में झलकती है। प्रसाद के नाटकों में नारी पात्र एक तरफ भावुक, त्यागशील, कर्तव्यपरायण, कोमल एवं उदार हैं तो दूसरी तरफ वे आत्म सम्मान के भाव से परिपूर्ण हैं। प्रसार स्त्रियों से कोमल स्वभाव की अपेक्षा रखते हैं तथा आत्म सम्मान की रक्षा के लिए उनके हरसंभव विद्रोह की कामना करते हैं। उनके नारी पात्रों में नारी का नारीत्व, भाभीर्य, साहस एवं आत्म सम्मान के प्रति सजगता स्पष्ट झलकती है।

शोध–पत्र

जयशंकर प्रसाद का राष्ट्रीय चिन्तन एवं स्त्री दृष्टि

'प्रसाद जी' के सम्पूर्ण साहित्य में राष्ट्रभक्ति एवं स्त्री के प्रति सम्मान झलकता है। उनके साहित्यकाल में स्त्रियों की दशा सोचनीय थी।

बहुविवाह, बालविवाह एवं अनमेल विवाह जैसी कुरीतियों ने नारी जीवन के सामाजिक पक्ष को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया था। इन परिस्थितियों में प्रसाद के मन में स्त्रियों के प्रति सम्मान एवं श्रृद्धा होना स्वाभाविक था जिस प्रकार छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा एवं सुमित्रानन्दन पन्त ने नारी को पूज्या, प्रेरणाप्रद, शक्ति एवं कल्याणकारी रूप में प्रस्तुत किया, ठीक उसी प्रकार प्रसाद ने भी स्त्री में पवित्र, स्नेहमयी, सह्रदया, सहचरी स्वरूप का दर्शन किया जो उनके साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। 'ऑसू' में 'प्रसाद' की उदार दृष्टि स्पष्ट झलकती है।

'ऑसू' में स्त्री वासना की प्रतीक नहीं है अपितु वह पुरूष के अंधकारमय जीवन की पथ प्रदर्शक है। उसका सौन्दर्य पावन आलोक से मण्डित है।

चंचल स्नान कर आवे, चन्द्रिका पर्व में जैसी।

उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुरी थी ऐसी।।

'तितली' उपन्यास में प्रसाद की स्त्रीवादी दृष्टि उभरकर सामने आती है। इस उपन्यास में मूर्तिमान नारीत्व, आदर्श भारतीय पत्नीत्व जागृत हुआ है। तितली प्रसाद की वह नारी पात्र है जिसमें स्वाभिमान का तीव्र भाव है। उसके पति मधुबन को सजा हो जाने पर एवं उसके पूर्वजों का शेरकोट वेदखल हो जाने पर तथा बनजरिया पर लगान लग जाने पर, इतनी दुरावस्था में भी वह किसी से सहायता की भीख नहीं मांगती बल्कि वह खुद मेहनत करके लडकियों की पाठशाला चलाती है और अपने पुत्र को पालती है। अपनी दुःखद स्थिति में अपने ही अविलम्ब पर वह स्वाभिमानपूर्वक जीना चाहती है। वह अपने अस्तित्व को बनाये रखने में समर्थ होती है। वह शैला से कहती है– ''मुझे दूसरों के महत्व–प्रदर्शन के सामने अपनी लघुता नहीं दिखानी चाहिए। मैं भाग्य के विधान से पीसी

जा रही हूँ। फिर उसमें तुमको, तुम्हारे सुख से घसीट कर, क्यों अपने दुःख का दृश्य देखने के लिए बाध्य करूँ? मुझे अपनी शक्तियों पर अवलम्ब करके भयानक संसार से लड़ना अच्छा लगा। जितनी सुविधा उसने दी है, उसी की सीमा में मैं लड़ूँगी, अपने अस्तित्व के लिए''।[1] अपनी विषम परिस्थितियों में उसका स्वाभिमान और क्षोभ और भी शक्तिशाली हो जाता है वह कहती है– ''नहीं, मुझे अपना दुख–सुख अकेली भोग लेने दो। मैं द्वार–द्वार पर सहायता के लिए और दरिद्रता का सुख लेने दो।'' उसमें स्वाभिमान इतना है कि वह दूसरों के उपकार को नहीं लेना चाहती, वह कहती है– ''मुझे पहले ही जब लोगों ने यह समाचार नहीं मिलने दिया कि उनका मुकद्‌दमा चल रहा है, तो अब मैं दूसरों के उपकार का बोझ क्यों लूँ''? अंततः वह अपने पुरूषोचित्त साहस से चौदह वर्षों तक बिना किसी के सामने झुके अपने बल पर अपनी सारी गृहस्थी बनाने में सफल होती है। उसके गरिमामयी व्यक्तित्व को देखकर इन्द्रदेव भी सोचते हैं– ''मैं तो समझता हूँ कि उसके जन्म लेने का उद्‌देश्य सफल हो गया है। तितली वास्तव में महीयसी है, गरिमामयी है।[2]

प्रसाद का मानना है कि स्त्री पुरूष के पतझड़ सदृश सूखे जीवन में हरियाली बनकर आती है।

पतझड़ था झाड़ खडे थे, सूखी सी फुलवारी में।

नवकिसलय का कुसुम बिछाकर आये तुम इस क्यारी में।।

उनकी नारी पुरूष के जीवन में कल्याणकारी बनकर आती है–

तू सत्य रहे चिर सुन्दर

मेरे इस मिथ्या जग के।

[1] प्रसाद ग्रंथावली भाग–1, प्रकाशक रत्नशंकर प्रसाद द्वितीय संस्करण–1989

[2] जयशंकर प्रसाद–कामायनी, राजपाल एण्ड संस दिल्ली–2000 पृ0 21

थे केवल जीवन संगी

कल्याण कलित इस मग के।।

उनकी स्त्री आत्म समर्पण करती है।

समर्पण लो सेवा का सार

सजल संस्तति का यह पतवार

आज से यह जीवन उत्सर्ग

इसी पद तल में विगत विकार।।

और पुरूष के मुँह से अनायास ही निकल पडता है–

हे सर्वमंगले! तुम महती

सबका दुःख अपने पर सहती।

कल्याणमयी वाणी कहती

तुम क्षमा निलय में हो रहती।।

प्रसाद के अनुसार नारी में समर्पण का भाव निहित होता है जबकि पुरूष में अधिकारिक भोग की कामना। नारी का जीवन त्यागमय है, पुरूष का जीवन स्वार्थपूर्ण। यही त्याग एवं समर्पण का भाव प्रसाद ने श्रद्धा में दर्शाया है। वे निःस्वार्थ त्याग को नारी का व्यक्तित्व मानते हैं। श्रद्धा अपने जीवनोत्सर्ग के बदले मनु से प्रतिदान में कोई कामना नहीं करती।

इस अर्पण में कुछ और नहीं

केवल उत्सर्ग हलकता है।

मैं दे दूँ और न फिर लूँ कुछ,

इतना ही सरल झलकता है।

माँ बनने की सूचना श्रद्धा से पाकर मनु उसका परित्याग करता है, जिस मनु पर श्रद्धा अपना सर्वस्व समर्पित करती है, वही मनु अपने प्रेम का विभाजन होते देख, उसको छोड़कर चला जाता है। पुरूष अपने स्वार्थ से एक कदम पीछे हटना नहीं चाहता जबकि श्रद्धा सदैव उसकी मंगल—कामना में लीन रहती है।

उपन्यास 'इरावती' की नारी पात्र इरावती एक अज्ञातकुल शीला बालिका है जिससे महादण्ड नायक पुष्यमित्र का पुत्र अग्निमित्र प्रेम करता है। परन्तु गुरूजनों के विरोध के कारण एक बार अग्निमित्र उसे छोड़कर चला जाता है तब से इरावती, महाकाल मन्दिर की देवदासी का जीवन व्यतीत करती है। कई बार वह कामुक बृहस्पति मित्र की कुदृष्टि का शिकार बनती है। वह अपनी जीवनव्यापी कष्टों को अपने हृदय पर दबाकर रखना चाहती है तथा उसे किसी के सम्मुख प्रकट नहीं करना चाहती और न ही किसी की सहानुभूति का पात्र बनना चाहती है। अग्निमित्र से कहे इन शब्दों में उसका स्वाभिमान व्यक्त होता है– ''स्त्री के लिए, जब देखा कि स्वावलम्बन का उपाय कला के अतिरिक्त दूसरा नहीं, तब उसी का आश्रय लेकर जी रही हूॅ। मुझे अपने में जीने दो।[3]

स्कन्दगुप्त नाटक में एक ओर तो अनन्तदेवी तथा विजया जैसे कुटिल स्त्री पात्र हैं वहीं दूसरी ओर सर्वगुण सम्पन्न स्त्री पात्र भी हैं। देवसेना, कमला, जयमाला एवं देवकी आदि का चरित्र करूणा, दया, क्षमा, त्याग, सेवा आदि गुणों से परिपूर्ण है। देवसेना राष्ट्र कल्याण के लिए विषम परिस्थितियों में भी उपस्थित होती है। जयमाला भी दुर्गरक्षा का भार उसके साथ स्वीकार करती है। वह अपने पति बंधु वर्मा को भी शत्रुओं से लड़ने को प्रेरित करती है।

देवसेना अपने व्यक्तिगत प्रेम को देश हित पर उत्सर्ग कर देती है। देवकी अपने हत्यारों को क्षमा कर देती है। उसकी क्षमामयी प्रतिक्रिया के समक्ष अनन्तदेवी का हृदय भी परिवर्तित हो जाता है। कमला अपने पुत्र को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है तो

---

3 प्रसाद के समग्र नाटक, लोक भारती प्रकाशन, प्रयाग 2004 पृ0 273

रामा अपने पति शर्वनाग को उचित पथ पर चलने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार स्कन्दगुप्त के स्त्री पात्र विश्व–कल्याण की भावना से ओत–प्रोत हैं। प्रसाद ने स्त्रियों के रूप को प्रकट करते हुए लिखा है, ''कठोरता का उदाहरण है पुरूष एवं कोमलता का विश्लेषण है स्त्री, पुरूष क्रूर है और स्त्री करूणा।''

''ममता'' की कहानी में ममता एक ब्राह्मण–विधवा है उसका वृद्ध पिता पुत्री के स्नेह में विहवल है। पिता स्वर्ण में उसके मन को उलझाकर उसकी वेदना को धीरे–धीरे विस्मृत करना चाहता है, इसलिए वह शेरशाह से उत्कोच स्वीकार कर लेता है, किन्तु स्वाभिमानिनी ममता को वह 'अर्थ' नहीं 'अनर्थ' प्रतीत होता है। वह उस धन को भविष्य के लिए एवं विपत्ति के लिए भी नहीं संचय करना चाहती। वह कहती है– ''क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हिन्दू भूपृष्ठ पर न बचा रह जाएगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके।'' यह उसके त्याग एवं सात्विकता का परिचय है।[4]

प्रसाद के स्त्रीपात्रों में गम्भीरता, भाव–प्रवणता, साहस आदि भाव उपस्थित हैं। इसके अतिरिक्त देश, समाज एवं परिवार के प्रति कर्तव्य बोध भी हैं। ये स्त्रियॉ नेतृत्व की क्षमता भी रखती हैं। वे राजनीति में पूर्णतः सक्रिय दिखायी देती हैं। ये स्त्रियॉ उदात्त आदर्शों को स्थापित करती हैं। प्रसाद के स्त्री पात्र पुरूष की प्रेरक शक्ति भी हैं। उन्होंने स्त्री को ही वह आलोक माना है जो पुरूष के शुष्क, संतप्त एवं व्यथित जीवन में हरियाली बनकर आशा का संचार करती हैं।

प्रसाद की स्त्रियॉ जिस बुलन्द आवाज एवं हौंसले के साथ अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती हैं उतनी अन्य छायावादी कवियों की नारी पात्र ऐसा नहीं कर पाती। प्रसाद की स्त्री पात्र पुरूषों के बराबर अधिकारों की मॉग करती हैं तथा अधिकारों की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष संघर्ष करती हैं। वे समस्त बन्धनों को तोड़कर समाज को चुनौती भी देती हैं।

'सालवती' कहानी की सालवती अत्यन्त दरिद्र है परन्तु दरिद्रता उसके स्वाभिमानी मन को मिटा नहीं सकती। जब वैशाली का उपराजा अभय कुमार उसे उपहार स्वरूप

4 प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद–प्रथम संस्करण 2004 पृ0 272

अपने कंठ की मुक्ता की एकावली देता है तो वह उसके दान को ग्रहण करने के स्थान पर अस्वीकार करती है।[5]

प्रेम और कर्तव्य का द्वन्द्व प्रसाद ने 'पुरस्कार' कहानी की मधूलिका में तथा 'आकाशदीप कहानी' की चम्पा में दिखाया है। मधूलिका के मानसिक द्वन्द्व को प्रेम नामक एक ही मूल भाव के दो रूपों के बीच उन्होंने दिखाया है। वे दो रूप हैं– अरूण से व्यक्तिगत प्रेम और पितृ–पितामहों की भूमि से प्रेम। अंततः प्रबल व्यक्तिगत प्रेम पर स्वदेश प्रेम की विजय होती है और अन्त में मधूलिका अपने प्रेमी के प्रति नारी सुलभ उत्तरदायित्व का भी निर्वाह करती है।[6]

'आकाशदीप' की चम्पा भी मानसिक द्वन्द्व को झेलती है। वह कभी जलदस्यु बुद्धगुप्त से प्रेम करती है तो कभी उसे अपने पिता का हत्यारा समझकर घृणा भी करती है। अंततः वह बुद्धगुप्त को स्वदेश लौटने की प्रेरणा देती है और स्वयं द्वीप के भोले–भाले प्राणियों की सेवा करने का संकल्प लेती है एवं मातृ–पितृ भक्ति की याद में उस द्वीप–स्तम्भ में आलोक जलाती है।[7]

प्रसाद के साहित्य में श्रद्धा, मल्लिका, तितली, देवसेना, देवकी, वासवी आदि ऐसे स्त्री पात्र भी हैं जिनकी करूणा, दया, ममता, सेवा, त्याग, कर्तव्यपरायणता एवं बलिदान की शक्ति के समक्ष पुरूष भी नतमस्तक होते हैं। प्रसाद स्त्रियों से ऐसे ही कोमल स्वभाव की आकांक्षा रखते हैं जिसका समर्थन करते हुए वे कहते हैं कि, ''स्त्रियों के संगठन में उनके शारीरिक एवं प्राकृतिक विकास में ही एक परिवर्तन है जो बतलाता है कि वे शासन कर सकती हैं किन्तु अपने हृदय पर, वे अधिकार जमा सकती हैं उन मनुष्यों पर जिन्होंने समस्त विश्व पर अधिकार किया है।''

यदि पुरूष स्त्रियों के कोमल गुण यथा करूणा, ममता, दया आदि का अनुचित लाभ उठाता है तो उससे हरसंभव विद्रोह होने की संभावना अवश्य बनती है। स्त्रियॉ करूणा,

[5] प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद–प्रथम संस्करण 2004 पृ0 119

[6] जयशंकर प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–7, संस्करण 2004 पृष्ठ 273

[7] जयशंकर प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–7, संस्करण 2004 पृष्ठ 271

कोमलता, सहृदयता, सहिष्णुता आदि सद्वृत्तियों के कारण ही समस्त अधिकारों की अधिकारिणी हैं।

प्रसाद के नाटकों में नारी–पात्र जहॉ एक ओर भावुक, त्यागशील, कर्तव्यपरायण, सेवा–परायण, कोमल, उदार इत्यादि हैं वहीं दूसरी ओर उनमें आत्मसम्मान का भाव प्रबल है। 'जनमेजय का नागयज्ञ' की सरमा एक स्वाभिमानी स्त्री है। मनसा द्वारा किये जातिगत अपमान को वह सह नहीं पाती। इसलिए नागकुल के अपमानपूर्ण राजसिंहासन को वह ठुकरा देती है परन्तु इतने पर भी वह नागों का अनिष्ट नहीं चाहती, यह उसकी उदारता का ही परिचय है।

'राज्यश्री' नाटक की राज्यश्री भी स्वभाव से क्षमाशीला, उदार एवं कोमल है परन्तु उसे अपने कुल की मर्यादा का पूरा–पूरा ध्यान है। इसलिए वह तलवार लेकर देवगुप्त पर निर्भयता से चलती है। उसे अपने राज्य का छीना जाना अपमानजनक लगता है।

'विशाख' की इरावती निर्धन सुश्रवा नाग की कन्या है। उसके सामने अनेक बाधाएँ आती हैं, परन्तु उसे निर्भीकता एवं दृढ़ता से पार करती है।[8]

उसकी दरिद्रता उसके आत्म सम्मान को नष्ट नहीं करती। राजा नरदेव द्वारा दिये गये महारानी बनने का प्रलोभन भी उसे मार्ग से विचलित नहीं करता बल्कि वह राजा को मुॅह तोड जबाव देती है कि झोपडी में ही राममन्दिर से अधिक सुख है। नरदेव की रानी भी चन्द्रलेखा पर हो रहे अन्याय के विरूद्व आवाज उठाती है और राजा को भयंकर परिणाम की चेतावनी भी देती है।

प्रसाद स्त्रियों से कोमल स्वभाव की ही अपेक्षा रखते हैं। साथ ही साथ आत्मसम्मान रक्षा के लिए उनसे हर संभव विद्रोह की भी कामना करते हैं। वस्तुतः प्रसाद के स्त्री पात्रो में गम्भीरता एवं साहस के साथ–साथ देश समाज एवं परिवार के प्रति दायित्व का बोध भी है। इन स्त्रियों में नेतृत्व क्षमता है और राजनीति में सक्रियता थी।

---

[8] जयशंकर प्रसाद, इरावती, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–7 संस्करण 1993, पृष्ठ 16

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रसाद की स्त्री पात्र ओजस्वी, शक्तिशाली, प्रतिभा सम्पन्न, साहसी, संघर्षशील, नेतृत्वकारिणी, राजनीति में सक्रिय होने वाली, रणभूमि में युद्ध के लिए तत्पर, अन्याय एवं अत्याचारों का विद्रोह करने वाली हैं। उसका हृदय विश्व कल्याण कामना, दुःख संतापों से द्रवित व करूणा से ओत–प्रोत है।

शोध सन्दर्भ

1. जयशंकर प्रसाद, इरावती, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–7 संस्करण 1993, पृष्ठ 16
2. जयशंकर प्रसाद–कामायनी, राजपाल एण्ड संस दिल्ली–2000 पृ0 21
3. प्रसाद के समग्र नाटक, लोक भारती प्रकाशन, प्रयाग 2004 पृ0 273
4. प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद–प्रथम संस्करण 2004 पृ0 272
5. प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद–प्रथम संस्करण 2004 पृ0 119
6. जयशंकर प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–7, संस्करण 2004 पृष्ठ 273
7. जयशंकर प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–7, संस्करण 2004 पृष्ठ 271
8. जयशंकर प्रसाद, इरावती, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद–7 संस्करण 1993, पृष्ठ 16